Important

गठबंधन की राजनीति :-

① गठबंधन का तात्पर्य

② ~~गठबंधन की राजनीति और उसकी विशेषताएं~~

③ ऐतिहासिक उद्भव

④ गठबंधन के नुकसान / गठबंधन के फायदे

Ogg के अनुसार :-

गठबंधन भिन्न राजनीतिक दल या राजनीतिक समूहों का अस्थायी सहयोगात्मक व्यवस्था है। गठबंधन संसदात्मक व्यवस्था है गठबन्धन की स्थिति जहाँ पर कोई राजनीतिक दल स्पष्ट बहुमत नहीं प्राप्त करता गठबंधन त्रिशंकु संसद की विशेष स्थिति है।

गठबन्धन से जुड़ी राजनीति को गठबन्धन की राजनीति कहते हैं

इसकी विशेषताएं =

गठबन्धन की विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न होती उस परिस्थिति के समापन के समापन से समाप्त हो जाती है यह विशेष उद्देश्य से आरम्भ होती है इसमें सौदेबाजी की प्रवृत्ति होती है इसमें लेन देन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है अर्थात राजनीतिक दलों को कुछ त्रुटि छोड़ा छोटे मोटे समझौता करना पड़ता, गठबन्धन से राजनीतिक में कायदा - व आस्थिर बनाये रखते है।

अनेक विकसित देशों में सफल गठबंधनीय संस्कृति देखी जाती है जैसे नीदरलैंड स्विट्जरलैण्ड, बेल्जियम पश्चिमी देशों में इटली एक ऐसा देश है जिसकी राजनीतिक व्यवस्था भारत से काफी मिलती जुलती है। इटली में भी अभी गठबंधन काफी विकसित हो रहा है। गठबंधन [illegible] समाजों [illegible] में [illegible] स्वाभाविक है दो-तीन राजनीतिक दलों का गठबंधन अधिक स्थायी होता तथा समान विचारधारा वाले राजनीतिक दल अधिक स्थायी होते हैं। गठबंधन की राजनीति में राजनीतिक नेताओं और दलों के निजी स्वार्थ बाजी चलती है गठबंधन में दरार और तनाव आते रहते हैं। गठबंधन तभी स्थायी होता है जब एक राजनीतिक दल बहुमत की स्थिति में हो और छोटे-2 दलों से समर्थन प्राप्त हो।

भारत में गठबंधन की राजनीति :-

विश्लेषकों के अनुसार भारत की गठबंधन की राजनीति कोई नई घटना नहीं है। इसका एक बहुत लम्बा इतिहास है भारत जैसे बहुल ~~समाज में~~ सांस्कृतिक गठबंधन स्वाभाविक है।

भारत में गठबंधन की राजनीति का आरम्भ 1937 से

देखा जा सकता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कांग्रेस व्यवस्था का आरम्भ हुआ कांग्रेस स्वयं एक बहुत बड़ा गठबन्धन था जिस में विभिन्न विचार धारा वाले लोग शामिल थे। अगर हम स्पष्ट रूप से राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन नहीं दिखता तो भी भारतीय राज्यों में गठबन्धन की राजनीति का आरम्भ काफी पहले हो चुका था। 1967 के चुनाव में छः प्रान्तों में गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आयी, केरल, पंजाब, W.B. बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश।

राष्ट्रीय स्तर पर 1969 को गठबन्धन की शुरूआत कही जा सकती जब कांग्रेस में प्रथम विभाजन के पश्चात इंदिरा गांधी की सरकार अल्पमत में आ गयी। सरकार कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया तथा D.M.K के बाह्य समर्थन से चलती। 1977 के सरकार पाँच राजनीतिक दलों का गठबन्धन था ऐसा गठबन्धन जिसमें राजनीतिक दलों की विचारधारा भिन्न थी वे पाँच दल, चौधरी चरण सिंह का भारतीय लोकदल, अटल बिहारी वाजपेयी, भारतीय जनसंघ, जार्ज फर्नांडिस और मधु दण्डवते सोशलिस्ट पार्टी

जग जीवन राम की कांग्रेस फार डेमोक्रेसी, मुरारजी देसाई, कांग्रेस (ओ), स्वतन्त्र पार्टी, से मीनू मसानी, इसके अतिरिक्त चन्द्रशेखर, कृष्णकांत

उपरोक्त गठबन्धन में गठबन्धन की संस्कृति का पूर्णरूप से अभाव था वे राजनीतिक एवं आपस में संघर्ष करते थे जिससे सरकार चलाना असम्भव हो गया। नेतृत्व में कई बार परिवर्तन करना पड़ा। मुरारजी देसाई के पश्चात चौधरी ~~[illegible]~~, चरण सिंह की सरकार बनी।

गठबन्धन की राजनीति का नया युग नवीं लोक सभा 1989 से आरम्भ होता है। वी० पी० सिंह के नेतृत्व में नेशनल फ्रंट का गठन किया गया जिसमें Left party और Bhartiya Janta Party. यह अल्पकालीन सरकार रही 1991 में दसवीं लोक सभा के लिए चुनाव कराये गये पुनः गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आयी। पी०वी० नरसिंह राव के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा गठबन्धन का नेतृत्व किया गया। सरकार अपना कार्यकाल पूरा कर सकी जो चुनाव परिणामों से निष्कर्ष निकाला गया कि भारत में गठबन्धन की राजनीति स्थायी स्थान ग्रहण कर रही है आरत

राजनीतिक अस्थिरता बहुदलीय व्यवस्था के कारण आ रही है 1996 के लोकसभा चुनाव ~~[illegible]~~ यू.एफ., कांग्रेस I C.P.I ने बाहर से समर्थन दिया 13 राजनीतिक दलों का गठबंधन था इसमें क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व बढ़ गया। भारत के किसी राज्य के मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री बनाया गया देवगौड़ा, प्रधानमंत्री बने परन्तु ज्यादा नेतृत्व नहीं दे सके। 1996 में सर्वप्रथम B.J.P. की 13 दिन की सरकार बनी। पुनः इन्द्र कुमार गुजराल बने। इसमें सामूहिक नई सरकार बनी। 1998 में पुनः चुनाव B.J.P. के नेतृत्व में पुनः गठबंधन का निर्माण था। अब वह की सरकार थी पार दिन। पुनः 1999 में आम चुनाव कराने पड़े और N.D.A. गठबंधन का 3 स्थ हुआ बार-2 चुनावों के कारण राजनीतिक अस्थिरता का दौर आरम्भ हुआ। भारत में गठबंधन की राजनीति के औचित्य को लेकर बड़ विवाद का आरम्भ हुआ। भारत में वर्तमान गठबंधन की राजनीति की विभिन्न प्रवृत्तियां देखी गयी।

(1) गठबंधनों का आधार नकारात्मक सौदेबाजी था।

2 अवसरवादों का निर्णय किसी प्रकार एवं विरोध को सत्ता से बाहर रखने के लिए किया गया।

(3) राष्ट्रीय दलों की तुलना में क्षेत्रीय दल महत्वपूर्ण

सौन्दर्य राष्ट्रीय महत्व के विषय और भी तथा
उच्च स्तरीय भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई समग्र भात
विभिन्न राजनीतिक दलों ने देश का शासन अपनाया।
गठबंधन का निर्माण करते किन्तु सरकार को स्थान
के नहीं रखा जिस कोई भारी महत्वपूर्ण रहा। गठबंधन
[illegible]
का अभाव रहा कुल मिलाकर कहा जा सकता है
कि गठबंधन की समस्त विशेषता नहीं हो सकी।
13 वीं लोकसभा ने अपना कार्यकाल पूरा किया
आशा की जाती है 14 वीं लोकसभा भी अपना
कार्यकाल पूरा करेगी। विश्लेषकों के अनुसार यह
यह एक सकारात्मक विकास है अस्थायित्व अस्थिरता
से धीरे-2 स्थिरता की ओर बढ़ रहे हो
भारत में यद्यपि अनेक बार गठबंधन के कारण
विभिन्न मुद्दे पर सरकार गिराया गया किन्तु और
इस प्रकार की राजनीतिक संकट का विकास हो
रहा है धीरे-2 गठबंधन संस्कृति का उदय
हो रहा है।

गठबंधन के सकारात्मक पहलू :- एक बहु
संस्कृति देश में गठबंधन की राजनीति प्रजातंत्र
के प्रसार की ओर इंगित करती है राजनीतिक

व्यवस्था के संघीय स्वरूप ले रही है। कोई एक राजनीतिक दल अपनी पूर्ण प्रभुता स्थापित नहीं कर सकता इस तरह से केन्द्रीकरण कहता है विभिन्न सामाजिक हितों और वर्गों का प्रतिनिधित्व करता है। केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति में कमी आयी है।

नकारात्मक परिणाम :-

गठबंधन की राजनीति के नकारात्मक परिणाम है जैसे राजनीतिक अस्थायीत्व के चलते आर्थिक विकास प्रभावित होती प्रशासनिक क्षमता प्रभावित होती है। मतदाताओं पर अनावश्यक भार पड़ता है चुनावों में काफी मात्रा में धन का दुरुपयोग होता है। बार-2 चुनावों के कारण मतदाताओं में थकावट का अभाव होता, भ्रष्टाचार को बल मिलता है।

निष्कर्ष :- भारत जैसे देश के लिए गठबंधन की राजनीति सकारात्मक परिवर्तन है क्योंकि इससे राजनीति में प्रतिनिधित्व में वृद्धि होती है। गठबंधन के नकारात्मक परिणाम का कारण गठबंधन की संस्कृति का अभाव है जिसे दूर किया जा सकता है। राज्य स्तर पर केरल, और पश्चिम बंगाल में सफल गठबंधन की संस्कृति दिखायी देती है। इसे

राष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने की आवश्यकता है। कुछ संरचनात्मक सुधार किये जा सकते हैं जर्मनी की व्यवस्था लायी जा सकती जर्मनी में सकारात्मक व रचनात्मक अविश्वास की व्यवस्था है।

इसके अतिरिक्त चुनावों से पूर्व गठबंधन के सहयोगों में समझ का विकास किया जा सकता है चुनावों पूर्व गठबंधन तथा Common minimum Programme पर कार्य किया जा सकता है अतः गठबंधन की राजनीति भारत के राजनीतिक व्यवस्था के लिए नकारात्मक पक्ष नहीं है समय-2 पर गठबंधन के नकारात्मक प्रभाव को देखते हुए कुछ सुझाव आये हैं जैसे राष्ट्रीय सरकार का गठन या फिर अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था, या प्रधानमंत्री का सम्पूर्ण लोक सभा से निर्वाचन

परन्तु उपरोक्त सुझाव भारतीय संदर्भ में उचित नहीं है भारत के लिए संसदात्मक व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है संसदात्मक व्यवस्था में सभी समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए। निर्वाचन सुधार तथा राजनीतिक संस्कृति के साथ - ऐसा करना सम्भव है।